कहाँ—क्या—है ?

पृष्ठ संख्या

१—धर्म, दर्शन और विज्ञान ३–२२

धर्म की उत्पत्ति ५
धर्म का अर्थ ७
दर्शन का स्वरूप ११
विज्ञान का क्षेत्र १४
धर्म और दर्शन १६
दर्शन और विज्ञान १८
धर्म और विज्ञान २१

२—दर्शन, जीवन और जगत् २३–६४

दर्शन की उत्पत्ति २६
भारतीय परम्परा का प्रयोजन ३०
दर्शन और जीवन ३७
जगत् का स्वरूप ३६
आदर्शवाद का दृष्टिकोण ४१
कुछ मिथ्या धारणाएँ ४२
आदर्शवाद की विभिन्न दृष्टियाँ ४४
यथार्थवाद ५४
यथार्थवादी विचारधाराएँ ५६
जैन-दर्शन का यथार्थवाद ६३

३—जैन दर्शन और उसका आधार ६५–१२२

जैन धर्म या जैन दर्शन ६८
भारतीय विचार-प्रवाह की दो धाराएँ ६६
ब्राह्मण संस्कृति ७२

पृष्ठ संख्या

श्रमण संस्कृति	७४
'श्रमण' शब्द का अर्थ	७६
जैन परम्परा का महत्त्व	७७
जैन दर्शन का आधार	८३
आगम युग	८३
आगमों का वर्गीकरण	८५
आगमों पर टीकाएँ	८७
दिगम्बर आगम	८८
स्थानकवासी आगम ग्रन्थ	८९
आगमप्रामाण्य का सार	९०
आगम युग का अन्त	९०
आचार्य उमास्वाति और तत्त्वार्थ सूत्र	९१
तत्त्वार्थ पर टीकाएँ	९३
अनेकान्त-स्थापना-युग	९४
सिद्धसेन	९४
समन्तभद्र	९९
मल्लवादी	१०२
सिंहगणि	१०३
पात्रकेशरी	१०३
प्रमाणशास्त्र-व्यवस्था-युग	१०४
अकलंक	१०४
हरिभद्र	१०६
विद्यानन्द	१०७
शाकटायन और अनन्तवीर्य	१०८
माणिक्यनन्दी, सिद्धर्षि और अभय देव	१०९
प्रभाचन्द्र और वादिराज	१०९
जिनेश्वर, चन्द्रप्रभ और अनन्तवीर्य	११०
वादी देवसूरि	११०
हेमचन्द्र	१११

पृष्ठ संख्या

अन्य दार्शनिक ११२
नव्य-न्याय-युग ११४
सम्पादन एवं अनुसंधान-युग ११६

४—जैन-दर्शन में तत्त्व १२३-२०२

जैन दृष्टि से लोक १२६
सत् का स्वरूप १२६
द्रव्य और पर्याय १३३
भेदाभेदवाद १३६
द्रव्य का वर्गीकरण १४६
आत्मा का स्वतन्त्र अस्तित्व १५१
आत्मा का स्वरूप १५८
ज्ञानोपयोग १५६
दर्शनोपयोग १६२
संसारी आत्मा १६३
पुद्गल १७८
अणु १७६
स्कन्ध १८३
पुद्गल का कार्य १८८
शब्द १८८
बन्ध १८६
सौक्ष्म्य १६०
स्थौल्य १६०
संस्थान १६०
भेद १६०
तम १६०
छाया १६१
आतप १६१
उद्योत १६१

पृष्ट संख्या

पुद्गल और आत्मा १९२
औदारिक शरीर १९२
वैक्रिय शरीर १९३
आहारक शरीर १९३
तेजस शरीर १९३
कार्मण शरीर १९३
धर्म १९४
अधर्म १९६
आकाश १९७
अद्धासमय १९९

५–ज्ञानवाद और प्रमाणशास्त्र २०३-२७२

आगमों में ज्ञानवाद २०६
मतिज्ञान २११
इन्द्रिय २१२
मन २१३
अवग्रह २१५
ईहा २१९
अवाय २२०
धारणा २२१
श्रुतज्ञान २२७
मति और श्रुत २२९
अवधिज्ञान २३२
मनःपर्ययज्ञान २३५
अवधि और मनःपर्यय २३७
केवलज्ञान २३८
दर्शन और ज्ञान २३९
आगमों में प्रमाणचर्चा २४५
तर्कयुग में ज्ञान और प्रमाण २५२

पृष्ठ संख्या

ज्ञान का प्रामाण्य २५५
प्रमाण का फल २५७
प्रमाण के भेद २५८
प्रत्यक्ष २६१
परोक्ष २६२

६–स्याद्वाद **२७३-३२४**

विभज्यवाद और अनेकान्तवाद २७७
एकान्तवाद और अनेकान्तवाद २८०
लोक की नित्यता अनित्यता २८३
सान्तता और अनन्तता २८३
जीव की नित्यता और अनित्यता २८५
सान्तता और अनन्तता २८७
पुद्गल की नित्यता अनित्यता २८८
एकता और अनेकता २९०
अस्ति और नास्ति २९१
आगमों में स्याद्वाद २९३
अनेकान्तवाद और स्याद्वाद २९४
स्याद्वाद और सप्तभङ्गी २९६
भङ्गों का आगमकालीन रूप ३००
सप्तभङ्गी का दार्शनिकरूप ३०८
दोष-परिहार ३१४

७–नयवाद **३२५-३४२**

द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक दृष्टि ३२८
द्रव्यार्थिक और प्रदेशार्थिक दृष्टि ३२९
व्यावहारिक और नैश्चयिक दृष्टि ३३०
अर्थनय और शब्दनय ३३१
नय के भेद ३३२
नयों का पारस्परिक सम्बन्ध

पृष्ठ संख्या

८—कर्मवाद ३४३-३५७

कर्मवाद, नियतिवाद एवं इच्छास्वातंत्र्य ३४६
कर्म का अर्थ ३४६
कर्म-बन्ध का कारण ३४७
कर्म-बन्ध की प्रक्रिया ३४७
कर्म-प्रकृति ३४८
कर्मों की स्थिति ३५४
कर्म-फल की तीव्रता मन्दता ३५५
कर्मों के प्रदेश ३५५
कर्म की विविध अवस्थाएँ ३५५
कर्म और पुनर्जन्म ३५७